श्रीगणेशायनमः

करकं क्षीरसम्पूर्णं तोयपूर्णमथापि वा । ददामि रत्नसंयुक्तं चिरञ्जीवतु मे पतिः ॥
इति मन्त्रेण करकान्प्रदद्याद्विजसत्तमे । सुवासिनीभ्यो दद्याच्च आदद्यात्ताभ्य एववा ॥
एवं व्रतंया कुरुते नारी सौभाग्यकाम्यया । सौभाग्यं पुत्रपौत्रादि लभते सुस्थिरां श्रियम् ॥

श्री करवाचौथ पूजन

करवाचौथ व्रत कथा

कार्तिक वदी ४ को करवाचौथ कहते हैं। इस में गणेशजी का पूजन व व्रत सुहागिन स्त्रीयाँ अपने पति की दीर्घ आयु के लिये करती हैं। प्राचीनकाल में द्विज नामक ब्राह्मण के सात पुत्र और एक वीरावती नाम की कन्या थी। वीरावती प्रथमबार करवाचौथ व्रत के दिन भूख से व्याकुल हो पृथ्वी पर मूर्छित हो कर गिर पड़ी, तब सब भाई यह देख कर रोने लगे और जल से मुँह धुलाकर एक भाई वट के वृक्ष पर चढ़कर चलनी में दीपक दिखाकर बहन से कहा कि चन्द्रमा निकल आया। उस अग्निरूप को चन्द्रमा समझ कर दुःख छोड वह चन्द्रमा को अर्घ दे कर वह भोजन के लिये बैठी। पहले कौर में बाल निकला, दुसरे कौर में छींक हुई, तीसरे कौर में ससुराल से बुलावा आ गया। ससुराल में उसने देखा कि उसका पति मरा पड़ा है, संयोग से वहाँ इन्द्राणी आई और उन्हें देखकर विलाप करते हुये वीरावती बोली कि हे माँ! यह किस अपराध का मुझे फल मिला। प्रार्थना करते हुये बोली कि मेरे पति को जिन्दा करदो। इन्द्राणी ने कहाँ कि तुमने करवाचौथ व्रत बिना चन्द्रोय चन्द्रमा के अर्घ दे दिया था यह सब उसी के फल से हुआ अतः अब तुम बारह माह के चौथ के व्रत व करवाचौथ व्रत का श्रद्धा और भक्ति से विधि पूर्वक करो तब तुम्हारा पति पुनः जीवित हो उठेगा। इन्द्राणी के वचन सुन वीरावती ने विधि-पूर्वक बारह माह के चौथ और करवाचौथ व्रत को बड़ी भक्ति-भाव से किये और इन व्रतों के प्रभाव से उस का पति पुनः देवता सदृश जीवित हो उठा ॥